कॉम्टे: प्रत्यक्षवाद

19वीं शताब्दी के फ्रांसीसी विचारक व समाजशास्त्र के जनक ऑगस्ट कॉम्टे प्रत्यक्षवाद/तथ्यवाद की अवधारणा को प्रतिपादित किया। हालांकि बीज रूप में प्रत्यक्षवाद कुछ प्राचीन विचारकों की चिंता में विद्यमान थी। परन्तु उसे एक दर्शन शास्त्र का रूप देने का श्रेय ऑगस्ट कॉम्ट (1798-1857) को है। प्रत्यक्षवाद का प्रयोग यूनानी दर्शन में भी मिलता है। अरस्तु ने वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर बीज रूप में प्रत्यक्षवाद या सकारात्मकवाद के विचार का ही पोषण किया था परन्तु कॉम्टे का कहना है कि "कोई भी वस्तु सकारात्मक नहीं हो सकती है जब तक उसे इन्द्रिय ज्ञान के द्वारा सिद्ध किया जा सके, अर्थात देखा, सुना, चखा या अनुभव किया जा सके।"

प्रत्यक्षवाद की वैज्ञानिक व्याख्या सर्वप्रथम ऑगस्ट कॉम्टे ने अपनी रचनाओं "Course of Positive philosophy (1842) में तथा The system of Positive Polity (1851) में इस अवधारणा की व्याख्या की है इसी कारण कॉम्टे को प्रत्यक्षवाद का प्रवर्तक माना जाता है। प्रत्यक्षवाद का अर्थ सामाजिक घटनाओं का प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण करके किसी निष्कर्ष पर पहुँचना है। प्राकृतिक विज्ञानों का विकास तेजी से इसी कारण हुआ कि इनके द्वारा विभिन्न पदार्थों का अध्ययन कोरी कल्पना के आधार पर न होकर करके निरीक्षण, परीक्षण के आधार पर किया जाता है। वैज्ञानिक इस आधार पर कार्य करते हैं कि सभी पदार्थ की प्रकृति तथा उनसे सम्बन्धित व्यवहार कुछ अपरिवर्तनशील नियमों पर आधारित होते हैं। प्रत्यक्षवाद के माध्यम से ही सामाजिक घटनाओं का अध्ययन एक वैज्ञानिक विधि द्वारा कर सकते हैं। इसके द्वारा घटनाओं का

अवलोकन, परीक्षण और वर्गीकरण करके विभिन्न घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्धों और उन्हें नियमित करने वाली पद्धतियों को समझना जा सकता है। रेमण्ड एरो (Raymond Aron, 1966) का मानना है कि- "प्रत्यक्षवाद का सम्बन्ध घटनाओं के अवलोकन, उनके विश्लेषण तथा उन घटनाओं के बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों को नियमित करने वाले नियमों की खोज करने से है।" इस प्रकार कहा जा सकता है कि सामाजिक घटनाओं का निरीक्षण, परीक्षण तथा विश्लेषण के आधार पर समझना ही प्रत्यक्षवाद है।

प्रत्यक्षवाद की आधारभूत मान्यताएँ :

कॉम्ट प्रत्यक्षवाद को अध्ययन की एक विशिष्ट पद्धति के रूप में विकसित करना चाहते थे, जिसका मूल उद्देश्य सामाजिक घटनाओं के अध्ययन को अधिक आनुभविक तथा यथार्थ बनाना है। प्रत्यक्षवाद को समझने हेतु इसकी मूल मान्यताओं को प्रस्तुत किया जाता है, जो निम्न हैं-

(i) जिस प्रकार प्राकृतिक घटनाएँ निश्चित नियमों पर आधारित होती हैं, उसी प्रकार सामाजिक घटनाएँ भी व्यवस्थित नियमों के द्वारा संचालित होती है।

(ii) अवलोकन, विश्लेषण, वर्गीकरण तथा परीक्षण के द्वारा संकलित सामाजिक तथ्यों के माध्यम से यथार्थ व वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है।

(iii) प्रत्यक्षवाद कोई अवधारणा या सिद्धान्त नहीं है क्योंकि यह अध्ययन की एक विशिष्ट या वैज्ञानिक पद्धति है जिसमें तार्किकता को महत्वपूर्ण माना जाता है।

(iv) इसमें उद्विकास के मानव समाज का भौतिक, बौद्धिक तथा नैतिक विकास करते हुए सामाजिक प्रगति की दिशा में आगे बढ़ना है।

कॉम्ट का मानना है कि जिस प्रकार प्राकृतिक घटनायें आकस्मिक ढंग से नहीं होती हैं, अपितु निश्चित नियमों तथा क्रमबद्धता पर आधारित होती हैं, उसी तरह से सामाजिक घटनायें भी कुछ निश्चित तार्किकता तथा नियमों से घटित होती हैं। उनका विश्वास था कि सामाजिक घटनाओं को संचालित करने वाले नियमों को प्रत्यक्षवाद की पद्धति के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

कॉम्ट का मानना था कि प्रत्यक्षवाद किन्हीं काल्पनिक तथ्यों पर आधारित न होकर एक ऐसे यथार्थ तथा वास्तविक ज्ञान से सम्बन्धित है, जिसे अवलोकन, वर्गीकरण तथा परीक्षण के द्वारा प्राप्त किया जाता है, इसलिए इसके द्वारा प्राप्त ज्ञान तथा निष्कर्ष अत्यधिक विश्वसनीय तथा प्रामाणिक होते हैं। इस विधि से मान्यताओं अथवा उपकल्पनाओं को सिद्ध किया जाता है।

कॉम्ट का मानना था कि प्रत्यक्षवाद कोई सामाजिक सिद्धान्त नहीं है बल्कि यह सामाजिक घटनाओं के विश्लेषण की एक वैज्ञानिक पद्धति है। इसके अन्तर्गत सामाजिक घटनाओं के अध्ययन करने हेतु निष्पक्ष अवलोकन, तथ्यों का परीक्षण करके व वर्गीकरण हेतु प्रयास किया जाता है, जिससे विभिन्न समानताओं तथा विविधताओं का विश्लेषण करके सामान्य नियमों को बनाया जा सके।

कॉम्ट का मानना है कि सामाजिक घटनाओं के कार्य-कारण सम्बन्धों को समझने में तर्क एक महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। उन्होंने प्रत्यक्षवाद में बौद्धिक क्रियाओं को अधिक महत्व देते हुए मानव मस्तिष्क की तार्किकता की विस्तृत विवेचना की। प्रत्यक्षवादी स्तर पर मानव की बौद्धिक क्षमता इतनी विकसित हो जायेगी कि वह सामाजिक घटनाओं के कारण तथा परिणाम को समझने के लिये अनुमानों के स्थान पर तर्कपूर्ण क्रियाओं को महत्व देने लगेगा।

कॉम्ट प्रत्यक्षवाद के आधार पर समाज का पुनर्निर्माण अथवा पुनर्गठन करना चाहता था। उनका मानना था कि खोजों के आधार पर एक नये समाज का निर्माण हो सकता है। प्रत्यक्षवाद को सामाजिक पुनर्निर्माण का एक प्रभावशाली साधन बनाने के लिये कॉम्ट

ने एक प्रत्यक्षवादी समाज के विकास पर भी बल दिया, जिसमें मनुष्यता की आध्यात्मिकता की जगह एकभावना और परम्परा का आधार तत्व हो। उन्होंने ऐसे समाज को परार्थवादी समाज का नाम दिया।

कॉम्ट प्रत्यक्षवाद के आधार पर समाज का आध्यात्मिक परिवर्तन नहीं करना था। उनका मानना था कि नवीन प्रौद्योगिकी, उद्योग और व्यापार आदि बाधा नहीं है, उनके कारण हम मानवीय, नैतिक एवं धर्मनिरपेक्ष समाज बनाने की जरूरत है। कॉम्ट धर्म से अत्यधिक प्रभावित थे, धर्म के लिए वह सामाजिक जीवन में नैतिकता को ही धर्म के लिए आवश्यक मानते थे। प्रत्यक्षवाद के द्वारा समाज में धर्म को वह वैज्ञानिक धर्म बनाना चाहते थे।

कोजर (1978) के अनुसार कॉम्ट उद्विकासवादी थे। उनके उद्विकासवादी विचारों के कारण प्रारम्भिक समाजशास्त्र को उद्विकासवादी कहा गया। वैज्ञानिक आधार पर विश्लेषण द्वारा समाज का पुनर्निर्माण करने की प्रेरणा देकर उन्होंने एक काल्पनिक समाज की परियोजना बनायी। पारसन्स (1949) ने कॉम्ट के विचारों की आलोचना करते हुए कहा कि उनके विचारों की वर्तमान में कोई प्रासंगिकता नहीं रह गयी है। कोजर (1977) ने कहा है कि एक लम्बे समय कॉम्ट का ऐतिहासिक विश्लेषण सामान्य तौर पर उचित है, लेकिन इसकी तरह उनके द्वारा प्रत्यक्षवादी समाज ने धारणा छोड़ पर्यावरणों ज्यादा पूंजीवादी समाज की व्याख्या का काल्पनिक आधार प्रस्तुत करने की योजना है। कॉम्ट के विचार प्रबोधनकाल से प्रभावित थे और उसी काल में ये विचार उत्पन्न हुए थे। तत्कालीन समाजशास्त्र का विचारों से तालमेल नहीं है, परन्तु उनका समाजशास्त्र के वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग आज भी समाजशास्त्रीय विश्लेषण में विद्यमान है।

डा० संजय कुमार वर्मा
समाजशास्त्र विभाग
डी.बी.एस. कॉलेज
कानपुर, उ.प्र.

II nd paper

Ques: बेरोजगारी की परिभाषा, इसके प्रकार, कारण व दूर करने के उपाय/सुझाव दें।

Dept. Director
Rising Star I.A.S.
Opp Lalpur Thana, H B Road, Ranchi

Ans: बेरोजगारी से आशय उस अवस्था से है, जिसमें एक व्यक्ति कोई काम करने के लिये इच्छुक हैं, लेकिन उसे काम करने के अवसर उपलब्ध नहीं होते। दूसरे शब्दों में बेरोजगार व्यक्ति वह है जिसमें कमाने की अन्तर्निहित क्षमता और इच्छा होने पर फिर भी उसे वैतनिक काम नहीं मिल पाता। भारत में योजना आयोग ने उस व्यक्ति को बेरोजगार कहा है जो एक सप्ताह में एक दिन भी काम का रहता है।

उपर्युक्त परिभाषा के विश्लेषण से बेरोजगारी के तीन तत्व परिलक्षित होते हैं—

(i) व्यक्ति में काम करने की क्षमता होनी चाहिए
(ii) व्यक्ति में काम करने की इच्छा होनी चाहिए
(iii) व्यक्ति को काम ढूंढने के लिये प्रयत्न करना चाहिए।

प्रभाव: बेरोजगारी व्यक्ति के आत्मविश्वास को समाप्त करती है उसमें हीनता को जन्म देती है, सोच को निराशावादी बनाती है, समाज के प्रति आक्रोश उत्पन्न होता है जो कि सामाजिक अलगाव का कारण बनता है जिससे बेरोजगार व्यक्ति अमानवीय वृत्ति अथवा विध्वंसकारी व्यवहार करने लगते हैं।

आंकड़ा: वर्ष 2003 तक रोजगार कार्यालयों की कुल संख्या 915 में पंजीकृत बेरोजगार की संख्या ~~54.62~~ 54.62 लाख था। शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी 33.44% और ग्रामीण क्षेत्रों में 40.24% है। कुल बेरोजगार व्यक्तियों में से महाराष्ट्र पश्चिम बंगाल, बिहार और (49.5%) उत्तर भारत के तीन राज्यों - पश्चिम बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश और दक्षिण भारत के दो राज्यों केरल और तमिलनाडु में निवास करते हैं।

बेरोजगारी के प्रकार:

(i) चक्रीय बेरोजगारी - व्यापार या व्यवसाय में उतार चढ़ाव के कारण आती है। प्रकृति अस्थायी होती है तथा विशेष रूप से विकसित देशों में पायी जाती है।

(ii) मौसमी बेरोजगारी: मौसम में परिवर्तन होने के कारण वस्तुओं की मांग और पूर्ति में असंतुलन उत्पन्न होने से यह बेरोजगारी उत्पन्न होती है। साधारणतः यह कृषि व्यवसाय से जुड़ी है। काम की प्रकृति भी मौसमी हो जाती है ~~और~~ कुछ समय काम उपलब्ध ... भी यह बेरोजगारी पायी जाती है। जैसे- चीनी मिल आदि में

देशों में इस प्रकार की बेरोजगारी पाई जाती है। इसको [illegible] तीव्र वृद्धि तथा [illegible] निर्माण [illegible] कार्यक्रम के द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

[४] <u>प्रच्छन्न बेरोजगारी</u>: जब किसी व्यवसाय में आवश्यकता से अधिक श्रमिक लगे हों, ऐसे जो बाहर हैं तो सभी श्रमिक काम में लगे दिखलाई देते हैं, लेकिन इनमें से कुछ श्रमिक बेरोजगार की अवस्था में होते हैं। यदि कुछ श्रमिकों को वहां से हटा लिया जाए तो कुल उत्पादन में कोई कमी नहीं आती। विकासशील देशों में यह बेरोजगारी पाई जाती है। इसे अदृश्य बेरोजगारी भी कहते हैं।

<u>बेरोजगारी के कारण</u>:

① नये रोजगार अवसरों का अपर्याप्त निर्माण
[2] कृषि क्षेत्र में धीमा विकास
[3] दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली
[4] दोषपूर्ण आर्थिक आयोजन

अर्थशास्त्रियों ने [illegible] जनसंख्या की वृद्धि को, नई [illegible] अधिक उत्पादन को, [illegible] बचत की [illegible] बेरोजगारी का कारण माना है। [illegible] साधनों का तीव्र विकास, दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली और [illegible] नीति [illegible] अपर्याप्त [illegible] को भी इसका कारण माना है।

<u>बेरोजगारी दूर करने के सुझाव</u>:

बेरोजगारी की समस्या के हल हेतु [illegible] बेरोजगारी की प्रकृति और इसकी मात्रा को ध्यान में रखते हुए निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं-

① आर्थिक विकास की दर को तेज करना
② बचत और निवेश को प्रोत्साहन
③ जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण
④ लघु उद्योगों के विकास पर जोर
⑤ गैर कृषि आर्थिक गतिविधियों पर जोर
⑥ श्रम प्रधान तकनीकों को प्रोत्साहन
⑦ व्यावसायिक प्रशिक्षण की सुविधाएं
⑧ उत्पादकता के प्रति [illegible] के [illegible]
⑨ आय के वितरण में असमानताओं में कमी
⑩ नियोजन कार्यालयों का विस्तार
⑪ अन्य उपाय – [illegible] [illegible] ⑫ [illegible] [illegible]

4.20

Ques:- बेरोजगारी से आप क्या समझते हैं? उसके कारण, प्रकार, प्रभाव तथा इसे दूर करने का उपाय सुझाइये?

Ans:

बेरोजगारी का अर्थ होता है, जब किसी व्यक्ति काम करने के लिये इच्छुक हों, परन्तु रोजगार उपलब्ध न हो तब उसे बेरोजगारी कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, जब व्यक्ति के पास कार्य करने की क्षमता एवं इच्छा दोनों मौजूद हो, और वे कार्य करने की खोज में प्रयत्नशील हों, तब उसे बेरोजगारी कहा जाता है।
बेरोजगारी के उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि बेरोजगारी के तीन तत्व शामिल हैं.—

(i) व्यक्ति में कार्य करने की क्षमता होनी चाहिए
(ii) व्यक्ति में कार्य करने की इच्छा होनी चाहिए
(iii) व्यक्ति में कार्य खोजने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए।

भारत में औसत 6% से 7.34% बेरोजगारी है
NSSO -
Kerala - 11.4%
[illegible] - 8.6%
[illegible] - 3.3%
- हरियाणा [illegible]

– केरल, तेलंगाना, उत्तराखंड, बिहार, असम, झारखंड में उच्च [illegible]
11.4 8.6 7.6 7.2 8.1 7.7 [illegible] - 7.8 [illegible] - 6.7

कारण:-

बेरोजगारी किसी एक कारण से उत्पन्न नहीं होती बल्कि इसके अनेकानेक कारण मौजूद हैं - यथा -

(i) नए रोजगार अवसर के सृजन में कमी
(ii) कृषि कार्यों के विकास में कमी
(iii) दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली
(iv) दोषपूर्ण आर्थिक नियोजन
(v) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि दर
(vi) रोजगार कार्यक्रम [illegible]

हालांकि बेरोजगारी के क्लासिकल अवधारणा के मुताबिक मजदूरों की मजदूरी, तथा नव क्लासिकल अवधारणा के अनुसार अति उत्पादन बेरोजगारी उत्पन्न करने का महत्वपूर्ण कारक है। जबकि नवीन अर्थशास्त्री कीन्स महोदय के अनुसार प्रभावी मांग की कमी ही बेरोजगारी का कारण है। बेरोजगारी का सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक प्रभाव काफी बड़ा महत्वपूर्ण होता है - यथा - मानसिक व शारीरिक [illegible] करने से [illegible], अनुभवहीनता, असामाजिक [illegible], बीमारी एवं अपंगता का [illegible] आदि।

प्रकार:- बेरोजगारी के परिभाषा से स्पष्ट होता है, कि इसकी स्वरूप में भिन्नता हो सकती है। जैसे [illegible]

निम्न प्रकार की बेरोजगारी पायी जाती है -

(i) चक्रीय बेरोजगारी :- जब व्यवसाय में उतार-चढ़ाव हो तब उसे चक्रीय बेरोजगारी कहते हैं। इसकी प्रकृति अस्थायी होती है और ये विकसित देशों में पायी जाती है।

(ii) मौसमी बेरोजगारी :- ये बेरोजगारी मौसमी प्रकृति की होती है तात्पर्य ये कि वर्ष में किसी खास मौसम में व्यक्ति को रोजगार तो मिलता है, परन्तु 5-6 माह बेरोजगार जैसा रहना पड़ता है, यथा - कृषि कार्य में लगे व्यक्ति, में लगे व्यक्ति। ये भी अस्थायी होती है।

(iii) संरचनात्मक बेरोजगारी - ये बेरोजगारी विकासशील देशों में उत्पन्न होती है, जहां कार्य के मूलभूत ढांचे का अभाव होता है जहां तकनीकियों के नीचे इत्यादि तथा कुशल पर कम हो, वहां इस प्रकार की बेरोजगारी पायी जाती है। भारत में इस प्रकार की बेरोजगारी पायी जाती है।

(iv) अदृश्य बेरोजगारी :- अदृश्य बेरोजगारी का अर्थ है कि उत्पादन कार्य में लगे आवश्यकता से अधिक व्यक्तियों में से कुछ तो वास्तविक रूप से कार्य में लगे होते हैं और यदि व्यक्ति को यदि हटा लिया जाय तो उत्पादन कार्य पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ेगा। यथा - कृषि क्षेत्र में।

प्रभाव :- बेरोजगारी व्यक्ति के आत्मविश्वास को समाप्त करती है, फलतः उनमें निराशावाद की प्रवृत्ति पनपती है, सामाजिक अपराध उत्पन्न होने से सामाजिक असंतोष का अनुभव करता है। व्यक्ति में न सिर्फ आत्मगौरव होता है, बल्कि उनका अमानवीयकरण होता जाता है, व्यक्ति के व्यक्तित्व दिन-प्रतिदिन क्षीण होते जाते हैं। फलतः इन स्थितियों में वे विध्वंसकारी व्यवहार करने लगता है।

आंकड़े : वर्ष 2003 में भारत के श्रम नियोजन कार्यालय में वर्ष में दर्ज व्यक्तियों की रजिस्टरों में 54.44 लाख व्यक्ति थे जिनमें शहरी क्षेत्र 33.46%, तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 56.42% व्यक्ति बेरोजगार थे। भारत में कुल जनसंख्या का 7% आबादी आज भी बेरोजगार है। स्पष्ट है कि भारत में संरचनात्मक व मौसमी प्रकृति की बेरोजगारी पायी जाती है।

भारत में अधिकांश बेरोजगारी उत्तर भारत के तीन राज्यों उ० प्र०, बिहार तथा उड़ीसा में पाया जाता है, जबकि 60 भारत के केरल तथा तमिलनाडु में कम बेरोजगारी पायी जाती है।

बेरोजगारी दूर करने का सुझाव:

1. शिक्षा प्रणाली को रोजगारोन्मुख बनाना
2. लघु उद्योगों एवं कुटीर उद्योग को प्रोत्साहन देना
3. व्यवसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देना
4. नये रोजगारों का सृजन करना
5. आर्थिक विकास की गति को तीव्र करना
6. जनसंख्या वृद्धि को कम करना
7. पूँजी और निवेश को बढ़ावा देना
8. गैर कृषि कार्यों को प्रोत्साहन देना
9. ग्रामानुकूल रोजगार का सृजन करना
10. भ्रष्टाचार पर रोक लगाना
11. विदेशी प्रवास को बढ़ावा देना।

उपर्युक्त सुझावों के आलोक में स्पष्ट है कि किसी भी देश से शत प्रतिशत बेरोजगारी को दूर नहीं किया जा सकता है। व्यक्तियों किया जा सकता, बल्कि कुछ कम किया जा सकता है। जब तक शैक्षणिक प्रणाली को स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर बनाने की और नौकरशाही तथा राजनीतिक निर्णय तथा भ्रष्टाचार और समस्या, जड़ से दूर नहीं होगा तब तक किसी भी देश से बेरोजगारी जैसी समस्या को दूर नहीं किया जा सकता है।

डा० संजय कुमार झा
समाजशास्त्र विभाग
ए.बी.एन. कॉलेज, जमशेदपुर
को. वि., झारखण्ड